REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 9 | JUNE - 2022

व्यक्तित्व एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा के संदर्भ में विद्यार्थियों के आदतों का अध्ययन

Manoj Kumar[1] & Dr. Renu Goyal[2]
[1]Research scholar, Department of Education, I.I.M.T University Meerut (U.P), (U.P).
[2]Associate Professor, College of Education, I.I.M.T University Meerut.

ABSTRACT:

विद्यार्थी ही विद्यालय की शिक्षा पद्धति तथा सद्गुणों को अपनाकर स्वयं का ही नहीं बल्कि अपने मां-बाप व विद्यालय का नाम ऊंचा करता है। आकर्षक व्यक्तित्व वाले विद्यार्थी को शिक्षक द्वारा पसंद किया जाता है। विद्यार्थी के व्यक्तित्व में शिक्षण पद्धति का समझ, अंतः क्रिया , अभीप्रेरित होने की कला, विषय ज्ञान की उपलब्धि में वृद्धि इत्यादि शामिल है। विद्यार्थी के व्यक्तित्व तथा उपलब्धि अभीप्रेरणा के संदर्भ में विद्यार्थियों के आदतों का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध के शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है। शोधकर्ता ने डाल्टेनगंज शहर के सरकारी तथा गैर सरकारी विद्यालयों के छात्र-छात्राओं को न्यायदर्श के रूप में लेकर आंकड़े एकत्र किए हैं। प्रस्तुत शोध का लाभ विधार्थियो को , अध्यापकों को तथा समाज को मिलेगा।

KEY WORDS: विद्यालय की शिक्षा पद्धति, शिक्षण पद्धति का समझ.

INTRODUCTION

मनुष्य जीवन में व्यक्तित्व का विशेष महत्व होता है। सूरत कैसी भी हो, लेकिन सीरत अच्छी होनी चाहिए। ऐसा इसलिए, क्योंकि यही सीरत ही आपके व्यक्तित्व को दर्शाती है। मसलन कुछ लोग बहुत सुंदर दिखते हैं, लेकिन उनके बजाय कोई साधारण-सा व्यक्ति हमारे मन में अपनी गहरी छाप छोड़ देता है। बाहरी तौर पर सुंदर दिखने वाले शख्स की तुलना में साधारण व्यक्ति के चेहरे पर छाई मधुर मुस्कान, उसके व्यवहार में शिष्टाचार और बातचीत करने का सलीका हमारे दिलो-दिमाग में एक खास पहचान बना लेता है। हर मनुष्य का अपना-अपना व्यक्तित्व, अपनी पहचान है।हर व्यक्ति उस पत्थर की तरह है, जिसके भीतर एक सुंदर मूर्ति छिपी होती है, जिसे एक शिल्पी की आंख देख पाती है। वह उसे तराशकर सुंदर मूर्ति में बदल सकता है। हालांकि, मूर्ति पहले से ही पत्थर में मौजूद होती है, शिल्पी तो बस उस फालतू पत्थर को एक तरफ कर देता है, जिसमें मूर्ति ढकी होती है। जैसे किसी पेड़ पर दो पत्ते एक जैसे नहीं होते, वैसे ही हर व्यक्ति में अंतर होता है। सभी में कुछ खूबियां-खामियां होती हैं। बात सिर्फ इन्हें पहचानने और अच्छे गुणों को आत्मसात करने और बुरे गुणों का त्याग करने की है। यानी हम अपने व्यक्ति में हमेशा निखार ला सकते हैं। इस ओर सबसे पहले अपने मन-मस्तिष्क में सकारात्मक सोच लानी चाहिए। मतलब यदि हम सदैव सकारात्मक विचार रखेंगे तो हमेशा सृजनात्मक कार्य करेंगे।

उपलब्धि अभिप्रेरणा विद्यार्थियों में व्यक्तित्व की महत्पूर्ण विशेषताओं में से एक है, यह विद्यार्थियों के विचारों, भावनाओं, संवेदनाओं एवं मूल प्रवृत्तियों से संबंधित होती है। शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य होता है कि विद्यार्थियों को उनकी उपलब्धि से अभिप्रेरित करना जिसमें विद्यालय का शैक्षिक वातावरण महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा धनात्मक रूप से विद्यालय के शैक्षिक वातावरण से प्रभावित होती है।"

उपलब्धि अभिप्रेरणा एक विद्यार्थी से दूसरे विद्यार्थी की अलग-अलग होती है कुछ विद्यार्थियों को प्रेरणा आंतरिक रुप से मिलती है तथा कुछ को बाहरी रुप में मिलती है। प्रत्येक विद्यार्थी उपलब्धि अभिप्रेरणा से ही अपने लक्ष्य तक पहुँचता है। यदि विद्यार्थी अपने लक्ष्य तक पहुचने में कई बार असफल होते हैं किन्तु वह असफलता को ही अपनी सफलता मानकर आगे बढ़ते हैं वह अपना लक्ष्य आसानी से प्राप्त कर लेते हैं परन्तु जो विद्याथ् असफलता के डर से कार्य नहीं करता है वह अपना लक्ष्य प्राप्त करने में असमर्थ हो सकते हैं।"

इस अध्ययन में उपलब्धि अभिप्रेरणा से तात्पर्य -शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा से है। उपलब्धि अभिपे्ररणा में 'उपलब्धि' की मान्यता अधिक है यदि सचिन का प्रदर्शन 7 विपुल की अपेक्षा जीवन के हर क्षेत्र में उत्तम है अर्थात् उसके परीक्षा में उच्च प्रतिशत रहता है, खेल में, सांस्कृतिक कार्यक्रम में, व्यवहार में तथा अन्य सभी दृष्टिकोण से सचिन का निष्पादन (performance) विपुल से उत्तम है। यदि हम विपुल को पूछे कि सचिन के आपसे काफी अंक ज्यादा है ऐसा क्यों? उसका उत्तर मिलता है 'तो क्या हुआ'? सभी ऐसे प्रश्नों में विपुल का उत्तर 'तो क्या हुआ'? मिलता है। काफी समय बाद सचिन कोई बड़ा अफसर बन जाता है फिर भी विपुल का उत्तर 'तो क्या हुआ'? ही रहता है। यदि हम इसका विश्लेषण करे तो हमें अवश्य लगेगा कि सचिन के जीवन में उपलब्धि अभिप्रेरणा का प्रभाव पर्याप्त विद्यमान है जबकि विपुल में इसके विपरीत विफलता परिहार की प्रवृत्ति है।"

भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान इस वर्ष भी ऊपर बताया है। विद्यालय रूपी नाव पर सवार होने के लिए शिक्षक रुपी नाविक की आवश्यकता होती है। शिक्षक ही शिक्षा के पुनर्निर्माण की महत्वपूर्ण कुंजी है। किसी भी कार्य को करने के लिए यह सफलता प्राप्ति के लिए आंशिक प्रेरणा तथा उस कार्य में रूचि का होना बहुत आवश्यक है। शिक्षा की वह माध्यम है जो छात्रों में अभिप्रेरणा जागृत कर विषय के प्रति रुचि विकसित कर सकते हैं। शिक्षक के व्यक्तित्व का छात्र पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। यदि शिक्षक कक्षा कक्ष में अच्छी शिक्षण विधि का प्रयोग करते हुए छात्रों के स्तर के अनुकूल शिक्षण कराते हैं तो अधिगम प्रभावी होता है। इससे विद्यार्थियों का अभिप्रेरणा स्तर बढ़ता है। अभीप्रेरित विद्यार्थियों में ही संबंधित विषय के प्रति रुचि विकसित होती है। यदि शिक्षक की विशेषता नहीं है तो छात्र पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। सकारात्मक सोच और आशावादी अध्यापक के आदर्श व्यक्तित्व के अनिवार्य गुण है। छात्र अध्यापकों के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर स्वयं को गुरु के अनुकूल ढाल लेते हैं। शिक्षक का दे भी छात्रों को एक योग्य नागरिक बनाते हुए उसके भविष्य को संवारना होता है था। परंतु वर्तमान में परिस्थिति बिल्कुल अलग है। आज शिक्षक एवं व्यवसायिक शिक्षक बनकर रह गया है। शिक्षक छात्रों पर विद्यालय में ध्यान नहीं देने देते हैं। उचित ढंग से शिक्षण करवाते हैं। वहीं शिक्षक यदि कोचिंग ट्यूशन में उसी विषय को पढ़ाता है तो बहुत अच्छे ढंग से पढ़ाता है। सोता ही कोचिंगकी ओर आकर्षित होते हैं। वह विद्यालय चुराने लगता है।

वह विद्यालय से जी चुराने लगते हैं दी बालकों को जबरन विद्यालय भेजा जाता है तो वह तनावग्रस्त रहते हैं और उनका मानसिक विकास प्रभावित होता है। आज शिक्षक अपने व्यक्तित्व के छात्र छात्रों पर छोड़ने में असमर्थ हैं। यदि शिक्षक छात्रों को भी प्रेरित कर सके तथा सकारात्मक सोच विकसित कर सके तो विषय के प्रति आदतों को विकसित करके शिक्षण अधिगम को प्रभावित बनाया जा सकता है। माध्यमिक स्तर की शिक्षा बालकों के लिए संपूर्ण शिक्षा का हमेशा आया बालक देश का भविष्य है। अर्थात शिक्षक भारत का निर्माता है। जब भाग निर्माता शिक्षक इस समय मैं अपने व्यवसाय को संतुष्ट नहीं होंगे तो कैसे छात्रों को अभिप्रेरित कर सकेंगे। कैसे भविष्य के प्रति आदतों का विकसित विकास कर सकेंगे। यह समस्या वर्तमान में विकट समस्या है।

अतः समस्या के नवीनता के अंतर्गत छात्रों के लिए व्यक्तित्व का महत्व आदि का ध्यान रखते हुए समस्या का चयन किया गया है।

चर– प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता द्वारा अध्ययन हेतु निम्न चर सम्मिलित किए गए हैं।

1– स्वतंत्र चर – विद्यार्थी का व्यक्तित्व

2– आश्रित चर– विद्यार्थियों की उपलब्धि प्रेरणा तथा आदतों का अध्ययन।

चरो की कार्यात्मक एवं व्यवहारिक परिभाषिक शब्दावली –

माध्यमिक स्तर–कक्षा 10 तक शिक्षण कार्य कराने वाले विद्यालय माध्यमिक स्तर के विद्यालय का लाते हैं

विद्यार्थी–विद्यालय में शिक्षक द्वारा जिन बच्चों को शिक्षा प्रदान की जाती है उन्हे विद्यार्थी कहते है।

व्यक्तित्व –व्यक्तित्व व्यक्ति में उन मनोदैहिक व्यवस्थाओं का संगठन है जो वातावरण के साथ उसका अपूर्व समायोजन निर्धारण करती है।

उपलब्धि अभिप्रेरणा– उपलब्धि की चाह में प्राणी क्रिया करने के लिए प्रेरित होता है। प्रेरणा कार्य को आरंभ करने ,जारी रखने तथा नियमित करने की प्रक्रिया है।

आदत–आदत किसी प्राणी के उस व्यवहार को कहते हैं जो बिना अधिक सोच के बार-बार दोहराया जाये।

1 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं आदतों पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2–माध्यमिक स्तर के सरकारी तथा गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व से प्रभावित आदतों को ज्ञात करना।

3– माध्यमिक स्तर के छात्र छात्राओं को प्रभावित करने वाली अभिप्रेरणा का अध्ययन करना।

परिकल्पना –

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सरकारी विद्यालय के छात्राओं एवं गैर सरकारी विद्यालय के छात्राओं के विषय आदतों के स्तर पर में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।
2. माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा स्तर तथा आदतों के स्तर में कोई सार्थक से संबंध नहीं पाया जाता है।
3. सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा स्तर तथा आदतों के स्तर में कोई सार्थक संबंध नहीं पाया जाता है।

अनुसंधान का अभिकल्प –

शोध विधि– प्रस्तुत शोध की समस्या को समझ कर तथा संबंधित साहित्य का अवलोकन कर शोधकर्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है।

जनसंख्या –प्रस्तुत शोध में शोधकर्ताओं ने माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत डाल्टेनगंज शहर के विद्यार्थियों के जनसंख्या के रूप में लिया है।

न्यायदर्श–न्यायदर्श में 100 विद्यार्थियों को लिया गया है, जिसमें 50 विद्यार्थी सरकारी विद्यालय के तथा 50 विद्यार्थी गैर सरकारी विद्यालय से लिए गए हैं। 50 विद्यार्थियों में से 25 छात्र तथा 25 छात्राओं को चुना है।

उपकरण– शोधकर्ताओं ने अपने शोध में दो उपकरणों का प्रयोग किया है।

1– डॉक्टर बीपी भार्गव द्वारा निर्मित उपलब्धि अभिप्रेरणा टेस्ट का प्रयोग किया गया है। यह प्रमापिकृत उपकरण है। 2 –विषय आदतों से संबंधित द्वारा स्वयं निर्मित विषय आदर अभिरुचि अनुसूचि।

वैधता– प्रमापीकृत उपकरण वैधता प्राप्तांक डॉ विश्वनाथ मुखर्जी के SCT के प्राप्तांक पर सादृश्य 0.75 था। **विश्वसनीयता**– परीक्षण पुनः परीक्षण की विश्वसनीयता 0.87 है। सामान चरों के उत्तरों की तुलना पर विश्वसनीयता 0.79 है।

प्रयुक्त सांख्यिकी– शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध में प्राप्त प्रदत्त के विश्लेषण हेतु निम्नलिखित सांख्यिकी प्रवृत्तियों का प्रयोग किया है।

1– मध्यमान

2– प्रमाप विचलन,

3– टी–परीक्षण,

4– सहसंबंध।

व्याख्या– माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सरकारी विद्यालय के छात्राओं और गैर-सरकारी विद्यालय के छात्राओं के विषय आदतों के अभिरुचि स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है। इसका कारण हो सकता है कि सरकारी और निजी विद्यालयों में छात्राओं को जीवंत योगी विषय पढ़ाए जाते हैं और गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा का स्तर तथा विषय आदत अभिरुचि इस तरह में निम्न संबंध पाया गया। निम्न से संबंध का कारण हो सकता है कि विद्यार्थी शिक्षण कार्य से संतुष्ट नहीं हो। इस कारण छात्र प्रेरित नहीं हो पाते हैं ।

निष्कर्ष एवं सुझाव –अध्ययन के निष्कर्ष केवल उनकी जनसंख्या पर लागू होते हैं। प्रस्तुत अध्ययन डाल्टेनगंज शहर तक ही सीमित है। अध्ययन के निष्कर्षों की शुद्धता अवधारणाओं के प्रति पर आश्रित रहती है। शोध द्वारा प्राप्त परिणाम विभिन्न प्रकार के समस्याओं को हल करने में सहायक हैं। विद्यालय में शिक्षकों, अभिभावकों तथा बालको से यह अपेक्षा है कि सरकारी व गैर सरकारी दोनों ही प्रकार के विद्यालयों का वातावरण इस प्रकार का होना चाहिए जो बालकों के अंदर अभिप्रेरणा जागृत करें तथा अध्ययन में संबंधित विषय में रुचि आदत विकसित कर सके ताकि उनका शिक्षण अधिगम प्रभावी हो।

संदर्भ सूची–

1. श्रीवास्तव, डॉक्टर डीएन वर्मा, डॉ प्रीति ,,मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा आठवां संस्करण 2007,
2. भट्टाचार्य डॉक्टर जे सी अध्यापक शिक्षा अग्रवाल पब्लिकेशन थर्ड संस्करण 2008 ।
3. भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका अंक 1 वर्ष 32, जनवरी जून 2013,
4. इंडियन एजुकेशन मई 2009, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद
5. टीचर एजुकेशन अप्रैल, 2006 प्रोफेसर मोहम्मद मियांन दिल्ली